सप्तशक्ति संगम स्मारिका

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र

नामघर पथ, आर. जी. बरुवा रोड, गुवाहाटी - 05

Saptashakti Sangam Smarika: A Souvenir on Saptashakti Sangam Programmes published by Vidya Bharati Purvottar Kshetra, Guwahati, Assam.

प्रकाशक -
विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र,
नामघर पथ, आर. जी. बरुवा रोड,
गुवाहाटी - 05

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

सम्पादक - डॉ मिलन रानी जमातिया
डॉ बाबली चौधुरी

प्रथम संस्करण - मई 2026

टंकण व अलंकरण - संजीव डेका
विवेक तिवारी

मुद्रक -

अनुक्रमणिका

1. संकल्प 3
2. गीत 4
3. शुभकामना संदेश 5
4. प्रस्तावना 7
5. उद्देश्य / उपलब्धि 8
6. कार्यक्रम की रूपरेखा 8
7. स्त्री की अवधारणा 9
8. संगठन का परिचय 10
9. मनोगत 11
10. सप्तशक्ति संगम की पूर्वोत्तर यात्रा 12
11. मिजोरम 13
12. नागालैंड 14
13. मेघालय 15
14. मणिपुर 16
15. त्रिपुरा 17
16. अरुणाचल प्रदेश 18
17. दक्षिण असम 19
18. उत्तर असम 20
19. एकल अभियान 22
20. प्रांतशः अनुभव कथन 23
21. मातृत्व सम्मान 25
22. शोध 26
23. समाचार बीथिका 27

संकल्प

मैं सृजनकर्ता हूँ।
मैं अपने प्रति एवं
भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव का भाव रखूँगी।
मैं कुल परम्परा सिखाऊँगी।
मितव्ययता के साथ घर चलाऊँगी।
पर्यावरण-हितैषी जीवनशैली अपनाऊँगी।
भारत के नागरिक कर्तव्यों का पालन करूँगी।
परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व कल्याण के लिए
कार्य करूँगी।
मैं अपनी सप्तशक्ति का जागरण करने के लिए
संकल्पित हूँ।

।। भारत माता की जय ।।

गीत

हम ही मातृशक्ति हैं,
हम ही आदि शक्ति हैं,
हम ही काली हम ही दुर्गा,
हम ही भद्रकाली हैं।
हम ही कर्मयोगिनी,
हम ही दिव्यशोभिनी,
हम ही दुष्टनाशिनी,
हम ही ब्रह्मवादिनी ।।

नया उत्साह ले मन में,
कदम आगे बढ़ाएं हम,
कहा जाता हमें तरुणी,
आज तरुणाई दिखायें हम ।। धृ० ।।
नया उत्साह ले मन में.....

हम ही हैं राष्ट्र की आर्या,
समूचे विश्व की जननी
हमारे ही पराक्रम से,
देश आगे बढ़ायें हम ।।1।।
नया उत्साह ले मन में.....

हमारे देश को शत्रु,
जो टेढ़ी आंख से देखे
बनें जीजा, कण्णगी हम,
चेन्नम्मा और अहिल्या हम ।।2।।
नया उत्साह ले मन में.....

करें हम राष्ट्र की रक्षा,
हिमाचल सम अडिग बनकर
समूचे विश्व में पुरुषार्थ की,
गंगा बहायें हम ।।3 ।।
नया उत्साह ले मन में.....

नवयुग का नव विचार आया
नव चेतना भरा जीवन।
अपने घर को चलो बनायें
गोकुल सा जनमन भावन।।

उठते ही हो भूमि वंदना
क्षमा मांगते धरती से,
सूरज की वो हंसती किरणें
सुप्रभात कहतीं हमसे।
वैदिक मंत्रों के पाठन से
घर का हर कोना पावन।
नवयुग का नव विचार आया
नव चेतना भरा जीवन ।।1 ।।

अपना भोजन मन निर्माता
ब्रह्म कहा है वेदों में
ऐसा भोजन साथ करें तो
अमृत घुलता तन-मन में
मिलकर बांटें सुख-दुःख बातें
रहे एक हृदस्पंदन।
नवयुग का नव विचार आया
नव चेतना भरा जीवन ।।2।।

नभ में उड़ान भरने वाले
पंख प्राप्त हों इस घर को
संस्कृति का संवर्धन करती
धरा प्राप्त हो इस घर को
सहज भाव से धर्म साधना
घर अपना पुरुषार्थ प्रवण।
नवयुग का नव विचार आया
नव चेतना भरा जीवन ।।3।।
अपने घर को चलो बनायें
गोकुल सा जनमन भावन।।

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान

VIDYA BHARATI AKHIL BHARATIYA SHIKSHA SANSTHAN

प्रज्ञा सदन, सरस्वती बाल मन्दिर परिसर, रिंग रोड नेहरू नगर, नई दिल्ली–110 065

Pragya Sadan, G.L.T. Saraswati Bal Mandir, Ring Road, Nehru Nagar, New Delhi-110 065

शुभकामना संदेश

पूर्वोत्तर क्षेत्र की 'सप्तशक्ति संगम' स्मारिका के प्रकाशन के अवसर पर आप सभी माताओं, बहनों एवं कार्यकर्ताओं को मेरा स्नेहपूर्ण वंदन एवं हार्दिक शुभकामनाएँ।

संघ शताब्दी वर्ष के पावन अवसर पर 'सप्तशक्ति संगम' के माध्यम से नारी शक्ति के जागरण, संगठन और सशक्तिकरण का जो अभिनव प्रयास प्रारंभ हुआ है, वह आज पूर्वोत्तर की पुण्यभूमि पर एक सशक्त सामाजिक चेतना के रूप में विकसित होता दिखाई दे रहा है। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि महिलाओं की अंतर्निहित शक्तियों—वाक्, श्री, स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा आदि—को पहचानने और उन्हें समाज एवं राष्ट्र निर्माण में सक्रिय रूप से अभिव्यक्त करने की एक सार्थक पहल है।

मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि 26-27 जुलाई 2025 को पूर्वोत्तर क्षेत्र की कार्यशाला में आप सभी के साथ मिलकर इस अभियान की रूपरेखा पर विचार-विमर्श कर सकी। उस समय जो बीज बोया गया, वह आज एक विशाल वटवृक्ष का रूप लेता हुआ दिखाई दे रहा है। तत्पश्चात 12, 13 एवं 14 नवंबर 2025 को पुनः पूर्वोत्तर, विशेषकर असम एवं त्रिपुरा प्रवास के दौरान माताओं एवं बहनों के बीच उपस्थित होकर उनके उत्साह, आत्मीयता और समर्पण को निकट से अनुभव करने का अवसर मिला। यह अनुभव अत्यंत प्रेरणादायी रहा।

पूर्वोत्तर की मातृशक्ति ने जिस भाव से 'सप्तशक्ति संगम' को आत्मसात किया है, वह वास्तव में अनुकरणीय है। यहाँ की बहनों ने इस अभियान को केवल एक आयोजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे अपने जीवन का एक अंग बनाकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बनाया है। सेवा, संस्कार, संगठन और समर्पण के माध्यम से आप सभी ने जो कार्य किया है, वह आने वाले समय में नारी जागरण की एक सशक्त दिशा प्रदान करेगा।

यह स्मारिका केवल गतिविधियों का संकलन नहीं, बल्कि उन प्रेरणादायी प्रयासों, अनुभवों और भावनाओं का जीवंत दस्तावेज है, जो इस यात्रा के दौरान विकसित हुए हैं। मुझे विश्वास है कि यह स्मारिका आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी और नारी शक्ति के इस सतत प्रवाह को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

ईश्वर से प्रार्थना है कि पूर्वोत्तर की यह पावन भूमि नारी शक्ति के ऐसे ही जागरण और उत्थान की साक्षी बनती रहे तथा 'सप्तशक्ति संगम' का यह अभियान निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता रहे।

आप सभी को पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ।

– डॉ. मधुश्री संजीव सावजी
अखिल भारतीय संयोजिका, सप्तशक्ति संगम

It is a matter of great pleasure that Vidya Bharati Purvottar Kshetra is going to unveil a souvenir on Saptashakti Sangam. We often proclaim about women empowerment. But sometime we forget that they are the centre of all power; an eternal power. There is an amalgamation of seven kinds of power in them.

This sort of discourses will help to rejuvenate them. I hope your endeavour will bring success.

(Dr. Sankar Roy)
Vice-President
Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan

शुभकामना संदेश

अखिल भारतीय योजना के अंतर्गत 5 अक्टूबर 2025 से 19 फरवरी 2026 तक सम्पूर्ण पूर्वोत्तर क्षेत्र में आयोजित 'सप्तशक्ति संगम' कार्यक्रमों का सफल समापन निश्चय ही एक ऐतिहासिक और प्रेरणादायी उपलब्धि है। इस विराट अभियान के पूर्ण होने के पश्चात हमारी बहनों द्वारा एक स्मारिका निर्माण का जो महान संकल्प लिया गया है, वह अत्यंत सराहनीय, प्रेरणास्पद और दूरदर्शिता से परिपूर्ण है। यह स्मारिका न केवल इन कार्यक्रमों का दस्तावेज होगी, बल्कि नारी शक्ति के जागरण, संगठन और समाज निर्माण में उसकी भूमिका का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत करेगी।

इस अभियान के अंतर्गत हमारी समर्पित बहनों ने जिस प्रकार अथक परिश्रम, अदम्य उत्साह और अटूट संकल्प के साथ दिन-रात एक कर कार्य किया है, वह वास्तव में वंदनीय है। एक लाख से भी अधिक परिवारों तक संपर्क स्थापित करना तथा क्षेत्रभर में 680 से अधिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन करना कोई साधारण उपलब्धि नहीं है। यह न केवल उनके संगठन कौशल और नेतृत्व क्षमता को दर्शाता है, बल्कि यह भी प्रमाणित करता है कि जब नारी शक्ति जागृत और संगठित होती है, तो वह समाज में व्यापक परिवर्तन लाने की क्षमता रखती है।

यह स्मारिका इन सभी प्रयासों, अनुभवों और उपलब्धियों का संकलन होकर आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगी। इसके माध्यम से नारी शक्ति का तेज, उसकी गरिमा और उसके योगदान का व्यापक प्रसार होगा, जिससे समाज में सकारात्मक चेतना का संचार होगा।

स्मारिका का प्रकाशन पूर्ण सफलता के साथ संपन्न हो तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की नारी शक्ति का तेज चहुँ ओर प्रकाशमान हो — इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ।

गंगा प्रसाद प्रसाई

(डॉ. गंगा प्रसाद प्रसाई)
अध्यक्ष
विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र

'सप्तशक्ति संगम' का आयोजन महिलाओं के सशक्तिकरण के उद्देश्य से किया एक सुनियोजित प्रयास था। प्रारंभ से लेकर समापन तक संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन केवल महिलाओं द्वारा ही किया गया था। वैदिक काल से ही समाज में उच्च स्थान प्राप्त नारी की स्थिति समय के साथ पुरुषप्रधान व्यवस्था में कमजोर होती चली गई। यद्यपि विभिन्न समयों और परिस्थितियों में महिलाओं ने अपनी क्षमता का परिचय दिया, फिर भी वह पर्याप्त नहीं माना जा सकता।

राजगीर में आयोजित विद्या भारती की साधारण सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री कृष्णगोपाल जी द्वारा महिलाओं के द्वारा और महिलाओं के लिए अखिल भारतीय स्तर पर कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया।

इस आह्वान को स्वीकार करते हुए विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र में भी 'सप्तशक्ति संगम' कार्यक्रम का आयोजन सभी प्रांतों में सफलतापूर्वक किया गया। इस आयोजन ने नारी शक्ति के पुनर्जागरण का कार्य करते हुए एक नए युग की शुरुआत का संकेत दिया।

'सप्तशक्ति संगम' के माध्यम से नारी शक्ति के जागरण के साथ-साथ महिलाओं में उत्साह और सक्रिय सहभागिता भी बढ़ी, जिसने समाज के विकास के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले। यह कार्यक्रम भारत के अन्य प्रांतों की भांति पूर्वोत्तर भारत में भी महिलाओं को संगठित कर समाज और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर अग्रसर करने की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हुआ।

इस विशाल कार्यक्रम को सफलता प्रदान करने हेतु सभी बहनों को साधुवाद। इस अवसर पर प्रकाशित होनेवाली स्मारिका पूरे समाज की मार्गदर्शिका बने – इसी शुभकामना के साथ।

जगदीन्द्र रायचौधुरी

(डॉ जगदींद्र रायचौधुरी)
मंत्री
विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के मार्गदर्शन में आयोजित 'सप्तशक्ति संगम कार्यक्रमों' पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह केवल एक औपचारिक प्रकाशन नहीं, अपितु नारी शक्ति के विविध आयामों को समझने, पहचानने और समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम है।

हम प्रायः "नारी सशक्तिकरण" की बात करते हैं, परंतु कई बार यह भूल जाते हैं कि नारी स्वयं में ही समस्त शक्तियों का केंद्र है। वह अनादि, अनंत और शाश्वत शक्ति का स्वरूप है। उसके भीतर धैर्य, क्षमा, यश, श्री, वाक, स्मृति तथा मेधा जैसी सात प्रकार की शक्तियों का अद्भुत समन्वय विद्यमान रहता है। यही सप्तशक्ति उसे समाज की आधारशिला बनाती है।

विशेषतः पूर्वोत्तर भारत की नारी शक्ति अपने आप में अद्वितीय है। यहाँ की महिलाएँ पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी अग्रणी भूमिका निभाती हैं। उनकी सरलता में दृढ़ता, परंपरा में आधुनिकता और संवेदनशीलता में साहस का अनोखा संगम देखने को मिलता है। वे अपने समाज की संस्कृति और मूल्यों की संरक्षक होते हुए भी परिवर्तन और प्रगति की वाहक हैं। पूर्वोत्तर की महिलाएँ आत्मनिर्भरता, श्रमशीलता और आत्मगौरव का जीवंत प्रतीक हैं।

'सप्तशक्ति संगम' की यह स्मारिका न केवल नारी शक्ति के इन आयामों को उजागर करेगी, बल्कि उनमें नवचेतना, आत्मविश्वास और ऊर्जा का संचार भी करेंगे। यह प्रयास नारी के अंतर्निहित सामर्थ्य को पहचानने और उसे समाज निर्माण में और अधिक प्रभावी रूप से स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका यह सराहनीय प्रयास निश्चित ही सफल होगा तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

पवन तिवारी

(डॉ पवन तिवारी)
क्षेत्र संगठन मंत्री
विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र

प्रस्तावना

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नारी शक्ति के बोध, राष्ट्र की मुख्य धारा में उनकी सहभागिता और राष्ट्र को दिशा देने वाली उनकी चेतना आज समाज में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सह-सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी के सुझाव पर समाज के सहयोग के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं को संगठित करने का एक माध्यम प्रदान किया गया। संयोग से सप्तशक्ति कार्यक्रम का यह राष्ट्रव्यापी आयोजन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर किया गया।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है: "कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा।" (कीर्ति, संपदा, वाणी, स्मृति, मेधा, धैर्य और क्षमा — ये सात स्त्री गुण हैं)। इन्हीं आधारभूत विचारों को समाज जीवन में उतारने का प्रयास किया गया। समाज में महिलाओं की सकारात्मक और सृजनात्मक भूमिका को उजागर करने तथा उनकी सहभागिता और सामाजिक जागरूकता के उद्देश्य की पूर्ति हेतु "सप्तशक्ति अभियान" का शुभारंभ किया गया। इस अभियान के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण, परिवार प्रबोधन, स्वास्थ्य जागरूकता और नागरिक कर्तव्यों जैसे महत्वपूर्ण विषयों को सम्मिलित किया गया। जनसामान्य तक पहुँच बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सात महिलाओं की एक समिति का गठन किया गया, जिसने पूरे देश में कार्यक्रमों की योजना बनाकर उन्हें संचालित किया।

इस अभियान की व्यापकता और प्रभाव का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि देशभर में 26,345 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें समाज के सभी वर्गों से 30,21,699 महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन कार्यक्रमों से महिलाओं की संगठनात्मक क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व का एक सुंदर उदाहरण सामने आया। इन आयोजनों में सामाजिक जीवन में उत्कृष्ट कार्य कर रही 50,219 महिलाओं का सम्मान भी किया गया। इन कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में सकारात्मक सोच, जागरूकता और नवचेतना का वातावरण निर्मित हुआ।

आज की आवश्यकता है कि महिलाएँ "शक्ति" के रूप में समाज और राष्ट्र के सृजनात्मक कार्यों में अपनी सक्रिय भूमिका निरंतर निभाती रहें तथा सजग और संकल्पित रहें। एक कर्मशील नागरिक के रूप में महिलाओं को सामाजिक समरसता स्थापित करने तथा उत्कृष्ट विचार और चरित्र प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। यदि जनजातियों सहित समाज के सभी वर्गों की महिलाएँ सामाजिक कार्यों में सक्रिय हों, तो निश्चय ही राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की परिकल्पना साकार होगी। "सप्तशक्ति" इस दिशा में एक निरंतर प्रेरणादायी अभियान बना रहेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है "सप्तशक्ति स्मारिका" नारी शक्ति की चेतना को जागृत करने तथा समाज के सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में मार्गदर्शक बनेगी।

इस पवित्र कार्य के सभी सहयोगियों, समन्वयकों और योगदानकर्ताओं के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, जिनके परिश्रम और समर्पण ने "सप्तशक्ति" को एक राष्ट्रीय अभियान का स्वरूप प्रदान किया। इन कार्यक्रमों के प्रभाव और परिणामों को शोध कार्य के रूप में संकलित करने का प्रयास भी किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि समाज में किस प्रकार परिवर्तन आ रहा है।

"सप्तशक्ति स्मारिका" इस विशाल अभियान का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ, उनके विचार और कार्यों का संकलन है। इस स्मारिका के निर्माण में अपने बहुमूल्य सुझाव, मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान करने के लिए विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र के मान. अध्यक्ष प्रो. गंगा प्रसाद प्रसाइन, सचिव डॉ. जगदीन्द्र रायचौधुरी, क्षेत्रीय संगठन मंत्री डॉ. पवन तिवारी जी, शिशु शिक्षा समिति, असम के मान. अध्यक्ष श्री कुलेन्द्र कुमार भागवती, सचिव श्री जगन्नाथ राजबंशी, सभी प्रांत संयोजिकाएँ एवं सह-संयोजिकाएँ, क्षेत्रीय कार्यालय सचिव श्री लालजी सोनारी के प्रति मैं हृदय की गहराइयों से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। स्मारिका की डिज़ाइन को सजीव रूप देने वाले श्री विवेक तिवारी, श्री संजीव डेका एवं श्री विकास शर्मा, प्रिंट मीडिया तथा इसके अतिरिक्त इस स्मारिका के निर्माण में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी आदरणीय जनों को भी धन्यवाद क्योंकि आप सभी के मार्गदर्शन, सहयोग और स्नेह के बिना यह कार्य संभव नहीं हो पाता। यह स्मारिका आप सबके समर्पण, परिश्रम और प्रेरणा का ही साकार रूप है।

डॉ बाबली चौधुरी
विद्या भारती अखिल भारतीय
सह मंत्री

उद्देश्य

(1) कुटुम्ब व्यवस्था एवं पर्यावरण के प्रति मातृशक्ति की भारतीय दृष्टि विकसित करना।

(2) मातृशक्ति में आत्म-गौरव बढ़ाना।

(3) बालक के समग्र विकास में माता की भूमिका स्पष्ट करना।

(4) महिलाओं की सक्रियता बढ़ाना और निर्णय प्रक्रिया में सहभाग बढ़ाना।

(5) महिलाओं को परिवार, समाज एवं देश कल्याण के कार्यों की प्रेरणा देना।

(6) राष्ट्र एवं समाज निर्माण की दृष्टि से स्व का बोध एवं सामाजिक समरसता की दिशा में दायित्वबोध का जागरण करना।

(7) वर्तमान समय की संभ्रम की स्थिति में दिशा देना।

(8) समाज में तथा विशेष रूप से विद्या भारती संगठन में महिलाओं की सक्रियता बढ़ाना।

क्षेत्र स्तर पर उपलब्धि

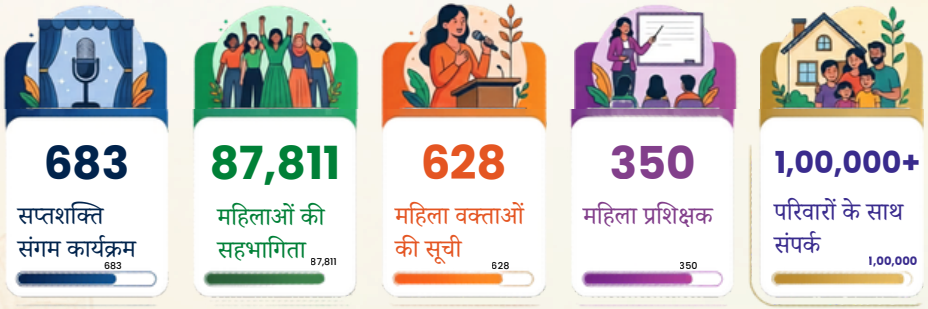

कार्यक्रम का स्वरुप

1. गीत - नव युग का नव विचार आया	
2. दीप प्रज्वलन	3 मिनट
3. संस्कृत वंदना (दो श्लोक)	3 मिनट
4. अतिथि परिचय एवं स्वागत	5 मिनट
5. प्रस्तावना	10 मिनट
6. समूह गीत : हम ही मातृशक्ति हैं....	5 मिनट
7. विषय- कुटुंब प्रबोधन एवं पर्यावरण के सम्बन्ध में भारतीय दृष्टि	35 मिनट
8. प्रश्नोत्तरी	15 मिनट
9. प्रेरणादायी महिलाओं के संदेश (वेशभूषा के साथ)	10 मिनट
10. भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका	25 मिनट
11. विशिष्ट माताओं का सम्मान	10 मिनट
12. अनुभव कथन (2 प्रतिभागी)	5 मिनट
13. अध्यक्षीय उद्बोधन	10 मिनट
14. आभार ज्ञापन	2 मिनट
15. संकल्प	2 मिनट

स्त्री, महिला और नारी : क्या ये केवल संज्ञाएँ हैं?

अवनीश भटनागर
अखिल भारतीय उपाध्यक्ष

दैवीय शक्तियों का वैसे तो कोई रूप-रंग-वर्ण-लिंग नहीं होता परन्तु समाज अपनी श्रद्धा भावना के आधार पर उनके किसी स्वरूप की कल्पना कर लेता है और तद्नुसार उनके प्रति माता या पिता के रूप में श्रद्धाभिव्यक्ति करता है। कृतज्ञता भाव से पूर्ण हिन्दू समाज ने जिससे भी जीवन में कुछ प्राप्त किया, उसे माता की संज्ञा दी - गंगा-यमुना-नर्मदा आदि नदियाँ माता हैं, गाय पशुमात्र नहीं माता है, तुलसी पौधा नहीं माता है। मातृशक्ति आराधक राष्ट्र भारत ने भगवती प्रकृति के प्रत्येक अंग को माता का स्थान दिया - पृथ्वी माता और भारत माता। वैदिक ऋषि ने उद्घोष किया माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

ऋषयः मन्त्रद्रष्टारः। ऋग्वेद और अथर्ववेद में मंत्रद्रष्टा ऋषियों में 25 ऋषिकाओं के भी नाम हैं- वागाम्भृणी, घोषा, अपाला, उर्वशी, इन्द्राणी, शची, रोमशा, श्रद्धा, कामायनी तथा वैवस्वती आदि। ये प्रख्यात ऋषिकाएँ 422 मंत्रों की द्रष्टा हैं।

जीवन के चार आश्रमों - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास की व्यवस्था का पालन करने वाले हिन्दू समाज में ऋषिगण आजीवन ब्रह्मचारी नहीं हैं। सत्य की साधना करने वाले देवतुल्य ऋषियों ने सृष्टिचक्र को निरन्तर चलाए रखने के लिए गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर सन्तति प्रवाह भी चलाया। लोपामुद्रा अगस्त्य ऋषि की सहधर्मिणी हैं। ऋग्वेद में इनके मध्य संवाद व्यक्तिगत नहीं, दिशाबोधक है। अगस्त्य का बल तप-साधना पर है, लोपामुद्रा का गृहस्थाश्रम की दृढ़ता पर, किन्तु उनका समन्वय प्रीतिकारी और अनुकरणीय है। इस रूप में वैदिक नारी निर्बल या शोषित नहीं है। लोपामुद्रा तर्कसंगत ढंग से अपने पति से खुलकर बात करती हैं। अथर्ववेद की ऋषिका इन्द्राणी स्वयं को 'मूर्द्धन्य एवं उग्र वक्ता' घोषित करती हैं।

ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में समाज की व्यवस्थाओं के सुचारु संचालन के लिए 'सभा' तथा 'समिति' का उल्लेख है, जिन्हें प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है। ध्यान दीजिए, ये आदर्श व्यवस्थापक संस्थाएं पुत्रियाँ हैं, पुत्र नहीं।

बृहदारण्यक उपनिषद में ऋषि याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के बीच सारगर्भित तर्क-वितर्क है। गार्गी सभानेत्री हैं, उनके साथ याज्ञवल्क्य का प्रश्नोत्तर पठनीय है। ऐसे असंख्य प्रसंग वेद-उपनिषद में वर्णित हैं जिनमें वैदिक काल में स्त्री का स्वाधीन, स्वाभिमानी, यज्ञकार्य में समभागी और मंत्रद्रष्टा विदुषी के साथ-साथ वीरव्रती योद्धा के रूप में उल्लेख है। ऋग्वेद के प्रसंग अनुसार विश्पला का पैर युद्ध में टूट जाता है और अश्विनी देवी उसके कृत्रिम पैर लगाती है। मुद्गलानी रथारूढ़ होकर युद्ध में विजय प्राप्त करती है।

वैदिक काल की यह परम्परा कालान्तर में पुराणकाल तक अविच्छिन्न है। दुर्गा सप्तशती की संपूर्ण कथा ही देवी माता की पराक्रम गाथा है। वह केवल चण्ड-मुण्ड विनाशिनी, रक्तबीज संहारिणी और मधु-कैटभ हन्त्री के रूप में असुरों का, समाज की दुर्जनशक्ति का नियन्त्रण नहीं करती, बल्कि ज्ञानिनामऽपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।। के रूप में ज्ञानियों की भी चेतना को बलपूर्वक आकर्षित कर नियंत्रित करती हैं। इसलिए वह महामाया है।

भारत शब्द पुरुषवाचक होते हुए भी भारतीय अनुभूति तो 'या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता' पर केन्द्रित है। भारतीय वाङ्मय असंख्य नारी पात्रों के उल्लेख से भरा है। विश्व की प्रथम आचार संहिता मनुस्मृति इसीलिए 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' के माध्यम से विश्व समुदाय के सम्मुख इसी नारी सम्मान की सशक्त उद्घोषणा करती है। लोकमानस में गौरी शंकर, सीता-राम, राधा-कृष्ण तथा वाणी-विनायक रूप में नारी का प्रथम स्थान इसी प्रभाव के कारण है। अर्द्धनारीश्वर में प्रकृति-पुरुष का समावेश इसी कल्पना से है। रामचरितमानस के मंगलाचरण में ही गोस्वामी तुलसीदास 'श्रद्धाविश्वास रूपिणौ' कहकर 'भवानीशंकरी वन्दे' लिखते हैं।

परकीय आक्रान्ताओं के आक्रमण तथा पराधीनता के कालखण्ड में समाज के चाल-चलन और रीति-रिवाज बदले। स्त्रियों की सुरक्षा पर प्रश्नचिह्न लग गए। उनकी शिक्षा, स्वतंत्रता, क्षमता विकास पर बाधा आई। शताब्दियों के इस दुष्प्रभाव ने भारतीय नारी को धीरे-धीरे द्वितीय श्रेणी का नागरिक बना दिया निर्बल, पराश्रित और निर्णय क्षमता विहीन।

अंग्रेजों के शासनकाल में शिक्षा के प्रसार के जो कार्यक्रम प्रारम्भ हुए उनमें राज नारायण बसु, राजा राममोहन राय या रवीन्द्रनाथ ठाकुर का उल्लेख तो होता है कि 1548 ई. में सावित्रीबाई फुले द्वारा पुणे में आरंभ की गई कन्याशाला की चर्चा के बिना यह सूची अपूर्ण है।

स्वाधीनता के बाद नारी शिक्षा के प्रयासों ने गति पकड़ी जिसका प्रभाव आज समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की अग्रगण्य सहभागिता के रूप में दिखाई देता है - राजनीति से प्रशासन, रक्षा से शिक्षा, विधायिका से न्यायपालिका, चिकित्सा से अभियांत्रिकी, सभी क्षेत्रों में आज महिलाएँ प्रमुख भूमिका में हैं। स्वाधीनता पश्चात के पाँच दशक इस सफलता की नींव में हैं।

21वीं शताब्दी में प्रवेश करने तक महिलाओं की स्थिति में विश्वभर में अनेक सुधारात्मक परिवर्तन आए। भारत भी इनसे अछूता न रहा। जहाँ विज्ञान-तकनीक, अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में महिलाओं को सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, विदेशों में आवागमन और संपर्क संवाद बढ़ा, वहीं पाश्चात्य अपसंस्कृति के दुष्प्रभाव भी भारतीय समाज जीवन में Women Liberation, live-in relationship, DINK family, My body my choice आदि के रूप में दिखाई देने लगे जिनमें उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। पारिवारिक विवाद, विवाह-विच्छेद आदि के प्रकरण बढ़ रहे हैं। इनके लिए पुरुष या स्त्री, किसी एक को पूर्णतः दोषी नहीं ठहराया जा सकता किन्तु स्त्री स्वातंत्र्य की एकांगी सोच इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं, जिसने स्त्री-पुरुष को परस्पर पूरक के स्थान पर प्रतिस्पर्धी और शोषक शोषित के रूप में बाँट दिया।

भारत में समाज की लघुतम इकाई यूरोप-अमेरिका की भाँति व्यक्ति (Individual) नहीं, परिवार है। इस परिवार की धुरी गृहिणी है- गृहिणी गृहमुच्यते। व्यष्टि के रूप में उसके नैसर्गिक भावात्मक, मनोवैज्ञानिक, संस्कार आधारित गुणों का स्वयं में विकास तथा माँ, गृहिणी एवं प्रथम शिक्षिका के रूप में अगली पीढ़ी में संक्रमित करने का दायित्व, चाहे-अनचाहे स्त्री का ही है। परिवार के केन्द्र बिन्दु के रूप में सबको जोड़कर रखना, जीवनमूल्यों का हस्तान्तरण करना, कुल परम्पराओं को जीवन्त रखना, व्यय की अधिकता के कारण परिवार के सदस्यों का अनैतिक माध्यमों की ओर आकर्षण न जाये इसलिए मितव्ययी जीवनशैली अपनाना तथा युगानुकूल सामाजिक रचना में भी सांस्कृतिक पहचान को न भूलना, यह सब गृहिणी के हाथ में है।

समाज जीवन में उपस्थित चुनौतियों का स्थिर रहकर सामना करने, विवेकपूर्ण निर्णय लेने, सामाजिक नियमों-परम्पराओं-व्यवस्थाओं का अनुशासनपूर्ण उपयोग तथा समाज में विभिन्न जाति-समुदाय-भाषा-रीति-रिवाज के प्रति सम्मान और समरसता बनाए रखना समाज के प्रति नारी का कर्तव्य है।

भारत की अवधारणा में राष्ट्र भौगोलिक या राजनैतिक इकाई नहीं, सांस्कृतिक अस्तित्व की पहचान है। अतः सांस्कृतिक मान्यताओं-परम्पराओं की तर्कयुक्त जानकारी समझ, पालन और अगली पीढ़ी को हस्तान्तरण करना, इसके माध्यम से राष्ट्र के सम्मुख आने वाले संकटों के निवारण का सामर्थ्य विकसित करना, राष्ट्र की चैतन्यशक्ति को जाग्रत रखना ही कृतिशील राष्ट्रभक्ति है, जिसकी सामर्थ्य केवल नारी के पास है।

भारत में स्त्री, महिला तथा नारी ये तीन पर्यायवाची शब्द प्रचलित हैं। भाषा- शास्त्रीय शब्द व्युत्पत्ति के आधार पर तीनों मूलतः अपने विशेष सन्दर्भ से युक्त हैं। 'स्त्री' शब्द की मूल धातु 'स्त्यै' है जो कोमलता, संचय, स्थूलता तथा विस्तार का सूचक है। महिला शब्द 'मह' अर्थात महानता तथा 'इला' की संधि से बना है अर्थात जिसकी महान बुदि हो। नारी का अर्थ है न+अरि अर्थात जिसका कोई 'अरि' (शत्रु) न हो। विचार करें, ऐसे महत्वपूर्ण अर्थों से युक्त स्त्री, महिला या नारी साधारण, अबला या हीन कैसे हो सकती है?

सप्तशक्ति संगम कार्यक्रमों की अन्ततः फलश्रुति क्या हो? मातृशक्ति में राष्ट्रबोध-समाजबोध-संस्कृतिबोध-अध्यात्मबोध का जागरण। आज की परिस्थितियों में शत्रुबोध होना भी आवश्यक है। जीजामाता के समान श्रेष्ठ मातृत्व, देवी अहिल्या जैसा कर्तृत्व, रानी लक्ष्मीबाई जैसी नेतृत्व क्षमता तथा भगिनी निवेदिता जैसी भारतभक्ति में सम्पन्न आज के युग की सक्षम-सामर्थवान नारी का विकास, यहीं तो उदेश्य है।

संगठन का परिचय

कार्य की वर्तमान स्थिति: एक दृष्टि में

01

भौगोलिक विस्तार

कुल जिले : 127

कार्ययुक्त जिले: 83

65%

02

शैक्षिक केंद्र

1527

औपचारिक: 648

अनौपचारिक: 879

03

आचार्य शक्ति

11563

औपचारिक: 10684

अनौपचारिक: 879

04

छात्र संख्या

200011

औपचारिक: 178773

अनौपचारिक: 21238

06

उच्च शिक्षा

1

महाविद्यालय

(श्रीभूमि सरस्वती महाविद्यालय)

05

उच्च शिक्षा

1

विश्वविद्यालय

(प्रागज्योतिषपुर विश्वविद्यालय)

आयाम

विद्वत परिषद्, शोध, संस्कृति बोध परियोजना, पूर्व छात्र परिषद्

शैक्षिक विषय एवं पद्धतियाँ

शिशु वाटिका, बालिका शिक्षा, शैक्षिक परिषद

गुणवत्ता विकास के विषय

प्रशिक्षण, मानक परिषद्, अटल टिंकरिंग लैब, कौशल विकास

विशेष क्षेत्र की शिक्षा

जनजातीय क्षेत्र की शिक्षा (एकल विद्यालय) , सेवा क्षेत्र की शिक्षा (संस्कार केन्द्र)

वैशिष्ट्य के विषय

वैदिक गणित, विज्ञान, स्वदेशी, पर्यावरण, खेलकूद परिषद, प्रचार विभाग

मनोगत

सप्तशक्ति संगम : विचार से व्यवहार तक की प्रेरणादायी भावयात्रा

डॉ मिलन रानी जमातिया
क्षेत्र संयोजिका
सप्तशक्ति संगम, पूर्वोत्तर

'सप्तशक्ति संगम' केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक सजीव भावयात्रा है—एक ऐसा प्रयास, जिसने महिलाओं की अंतर्निहित शक्ति को जागृत करते हुए उन्हें एक सशक्त पारिवारिक सूत्र में जोड़ने का कार्य किया है। यह यात्रा व्यक्तिगत अनुभूति से आरंभ होकर सामाजिक परिवर्तन के व्यापक अभियान में रूपांतरित होती है।

मेरे लिए 'सप्तशक्ति संगम' शब्द नया नहीं था। एक हिंदी की विद्यार्थी होने के नाते इसे पढ़ा और पढ़ाया था, परंतु इसके भाव का वास्तविक अनुभव 27 जून 2025 को हरियाणा में आयोजित एक बैठक में हुआ। उस दिन यह केवल एक अवधारणा नहीं रहा, बल्कि मेरे भीतर एक नई चेतना के रूप में जागृत हुआ। आदरणीय मधुश्री दीदी, रेखा दीदी, साधना दीदी और पवित्रा दीदी द्वारा प्रस्तुत इस विचार ने मन को गहराई से स्पर्श किया। उसी क्षण 'सप्तशक्ति' का बीज मेरे भीतर अंकुरित हुआ, जो आगे चलकर एक व्यापक सामाजिक अनुभव में विकसित हुआ।

पूर्वोत्तर भारत में 'सप्तशक्ति संगम' की औपचारिक शुरुआत विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान की केंद्रीय योजना के अंतर्गत, क्षेत्रीय संगठन मंत्री आदरणीय डॉ. पवन तिवारी जी के मार्गदर्शन में हुई। इस दिशा में पहला महत्वपूर्ण कदम 26 जुलाई 2025 को गुवाहाटी स्थित प्रकाशन भारती में आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला के माध्यम से उठा। माँ कामाख्या की पावन भूमि पर आयोजित इस कार्यशाला में पूर्वोत्तर के आठों प्रांतों से 32 महिलाओं ने सहभागिता की।

इस अवसर पर 'सप्तशक्ति संगम' की अखिल भारतीय संयोजिका आदरणीय डॉ. मधुश्री संजीव सावजी दीदी ने 'सप्तशक्ति' के अर्थ, स्वरूप और भारतीय समाज में उसके महत्व को अत्यंत सरल एवं प्रभावी ढंग से स्पष्ट किया। साथ ही कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। डॉ. पवन तिवारी जी ने भी अपने प्रेरक मार्गदर्शन में समाज में नारी की भूमिका और वर्तमान समय में इस अभियान की आवश्यकता को उदाहरणों सहित स्पष्ट किया। इस कार्यशाला ने पूर्वोत्तर की माताओं और बहनों के मन में इस विचार का सशक्त बीज रोपित किया।

अगले ही दिन उत्तर असम में आयोजित प्रांतीय कार्यशाला में मुझे 'सप्तशक्ति संगम' की रूपरेखा प्रस्तुत करने का अवसर मिला। यह मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण था। उपस्थित बहनों के प्रश्नों और संवादों ने विषय को और अधिक स्पष्ट किया तथा मेरे भीतर आत्मविश्वास का संचार हुआ। उसी समय यह अनुभव हुआ कि यह कार्य केवल आयोजन नहीं, बल्कि एक साधना है।

इसके पश्चात पूर्वोत्तर के सभी प्रांतों में संयोजिका एवं सह-संयोजिकाओं का गठन किया गया। अखिल भारतीय स्तर पर वक्ता-प्रशिक्षण आयोजित हुआ, जिसमें पूर्वोत्तर से 65 बहनों ने भाग लिया। विभिन्न प्रांतों में चरणबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम—प्रांत, विभाग, जिला और संकुल स्तर पर—आयोजित किए गए। साथ ही विद्यालयों के माध्यम से माताओं एवं समाज की अन्य महिलाओं से संपर्क स्थापित कर एक सशक्त संगठनात्मक तंत्र विकसित किया गया।

इस सुनियोजित तैयारी के परिणामस्वरूप 5 अक्टूबर 2025 को अरुणाचल प्रदेश के पासीघाट तथा मणिपुर के इम्फाल में कार्यक्रमों के साथ इस अभियान का औपचारिक शुभारंभ हुआ। यह केवल कार्यक्रमों की शुरुआत नहीं थी, बल्कि एक व्यापक सामाजिक जागरण का प्रारंभ था। 16 अक्टूबर को गुवाहाटी (उत्तर असम) में आयोजित भव्य कार्यक्रम ने इस अभियान को नई दिशा और गति प्रदान की। गीत, नाट्य प्रस्तुति और संवाद के माध्यम से महिलाओं की सक्रिय सहभागिता ने इसे एक आदर्श मॉडल बना दिया।

इसके बाद यह यात्रा उत्तर असम से दक्षिण असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा तक निरंतर विस्तारित होती गई। प्रत्येक प्रवास, प्रत्येक बैठक और प्रत्येक कार्यक्रम के साथ 'सप्तशक्ति संगम' का स्वरूप और अधिक सशक्त एवं व्यापक होता गया।

इस यात्रा का सबसे भावपूर्ण पक्ष रहा—माताओं और बहनों के अनुभव। बरपेटा में जब बहनों ने पहली बार अपने सम्मान की अनुभूति व्यक्त करते हुए आँसू साझा किए, त्रिपुरा में 'माँ' शब्द के वास्तविक अर्थ का अनुभव सुनाया गया, मणिपुर में सामाजिक परिवर्तन की आशा व्यक्त की गई और अरुणाचल प्रदेश में इसे संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम माना गया—ये सभी क्षण इस यात्रा को जीवंत और सार्थक बनाते गए।

नागालैंड और मिजोरम जैसे क्षेत्रों में कार्यक्रमों का सफल आयोजन इस यात्रा की विशेष उपलब्धि रही। प्रारंभ में जो असंभव प्रतीत होता था, वह सामूहिक प्रयास, समर्पण और विश्वास से संभव हुआ। यह अनुभव इस सत्य को और दृढ़ करता है कि सशक्त संकल्प के सामने कोई बाधा स्थायी नहीं होती।

इस संपूर्ण अभियान के अंतर्गत 683 कार्यक्रमों में 87,811 माताओं की सहभागिता, 2154 बहनों का सम्मान और 618 वक्ताओं का योगदान—ये आँकड़े केवल संख्या नहीं, बल्कि उस विश्वास, सहभागिता और समर्पण के प्रतीक हैं, जो इस अभियान से जुड़े।

'सप्तशक्ति संगम' ने यह सिद्ध किया कि जब महिलाओं के भीतर निहित सप्त शक्तियाँ—कीर्ति, श्री, वाक, धैर्य, स्मृति, बुद्धि और क्षमा—जागृत होती हैं, तो न केवल उनका व्यक्तित्व विकसित होता है, बल्कि संपूर्ण समाज में सकारात्मक परिवर्तन की धारा प्रवाहित होती है।

अंततः, यह यात्रा मेरे लिए केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि एक गहन भावानुभूति बन गई है। इसने मुझे सेवा का वास्तविक अर्थ, समन्वय की शक्ति और स्नेह की गहराई का अनुभव कराया। आज 'सप्तशक्ति संगम' मेरे लिए एक सजीव सेतु है—हृदयों को जोड़ने वाला, समाज को दिशा देने वाला और आत्मा को स्पर्श करने वाला। यह भावयात्रा आगे भी निरंतर प्रेरणा देती रहेगी।

मिजोरम

मिजोरम की रोपुइलियानी और रानी कालिंदी को नारी शक्ति के सशक्त प्रतीक कहा जाता है। रोपुइलियानी ने 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अदम्य साहस के साथ संघर्ष करते हुए अपने समुदाय के स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा की। वहीं रानी कालिंदी ने दूरदर्शी नेतृत्व से सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए शांति, संतुलन और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण किया। दोनों ने अपने त्याग, साहस और नेतृत्व के माध्यम से मिजोरम के समाज को दिशा दी और नारी शक्ति का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया।

Great Ruler
Rani Kalindi

Great Ruler
Queen Ropuiliani

नागालैंड

नागालैंड के इतिहास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत प्रेरणादायी रही है, जिसमें रानी गाइदिन्ल्यू का नाम प्रमुख है। मणिपुर में 1915 में जन्मी गाइदिन्ल्यू ने कम आयु में ही 'हेराका आंदोलन' के माध्यम से ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया और अपने गुरु जादोनांग के निधन के बाद आंदोलन का नेतृत्व संभाला। 1932 में उन्हें गिरफ्तार कर आजीवन कारावास दिया गया, परंतु 1947 में स्वतंत्रता के बाद वे रिहा हुईं। उनके साहस से प्रभावित होकर जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'नागाओं की रानी' की उपाधि दी। उन्होंने जीवनभर नागा समाज की एकता, संस्कृति और उत्थान के लिए कार्य किया और आज वे नारी शक्ति, साहस एवं राष्ट्रभक्ति की प्रेरणादायी प्रतीक मानी जाती हैं।

Freedom Fighter

Rani Gaidinliu

मेघालय

मेघालय की खासी जनजाति की साहसी वीरांगना का फान नोंग्लैत ने 19वीं शताब्दी के खासी विद्रोह (1829–1833) में यू तिरोत सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध सक्रिय भूमिका निभाई। लोकपरंपराओं के अनुसार, उन्होंने पुरुष वेश में युद्ध करते हुए अदम्य साहस और नेतृत्व का परिचय दिया। यद्यपि उनके जीवन के ऐतिहासिक विवरण सीमित हैं, फिर भी वे साहस, आत्मगौरव और नारी शक्ति की प्रेरणादायी प्रतीक के रूप में आज भी सम्मानपूर्वक स्मरण की जाती हैं।

मणिपुर

नूपी लान, अर्थात “महिलाओं का युद्ध”, मणिपुर में महिला शक्ति और संगठन का अद्वितीय उदाहरण है। यह 1904 और 1939 में दो चरणों में हुआ, जब महिलाओं ने औपनिवेशिक नीतियों और आर्थिक शोषण के विरुद्ध सशक्त आंदोलन किया। 1904 में उन्होंने जबरन श्रम (‘लालुप’ प्रणाली) का विरोध कर प्रशासन को निर्णय बदलने पर मजबूर किया, जबकि 1939 में चावल के निर्यात के विरुद्ध संगठित होकर जनआंदोलन खड़ा किया। इस संघर्ष ने महिलाओं की सामाजिक-राजनीतिक भूमिका को सशक्त किया और भविष्य के आंदोलनों के लिए प्रेरणा प्रदान की।

त्रिपुरा

महारानी सुदक्षिणा जमातिया और महारानी कंचन प्रभा देवी त्रिपुरा की प्रेरणादायी शासक थीं, जिनमें त्याग, दूरदर्शिता और समाज के प्रति समर्पण स्पष्ट दिखाई देता है। सुदक्षिणा जमातिया ने परंपराओं को संजोते हुए समाज में एकता और स्थिरता बनाए रखी, वहीं कंचन प्रभा देवी ने महाराजा के निधन के बाद संयमपूर्वक शासन संभालते हुए त्रिपुरा के हित में भारत के साथ विलय का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। दोनों का जीवन सच्चे और उत्तरदायी नेतृत्व का उत्कृष्ट उदाहरण है।

Great Ruler

Maharani Sudakshina Jamatia

Great Ruler

Maharani Kanchan Prabha Devi

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश का जनजातीय समाज प्रकृति से गहरा जुड़ाव रखता है। यहाँ की कई जनजातियाँ, खासकर दोन्यी-पोलो परंपरा को मानने वाले लोग, दोन्यी (सूर्य) को माँ और पोलो (चंद्रमा) को पिता मानते हैं। यह केवल धार्मिक विश्वास नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान और उसके साथ मिलकर जीने की सोच को दर्शाता है। वे सूर्य और चंद्रमा को जीवन देने वाला मानते हैं और उनकी पूजा करते हैं। वे खुद को प्रकृति से अलग नहीं, बल्कि उसका ही हिस्सा मानते हैं। इसी वजह से उनका जीवन पर्यावरण की रक्षा, आपसी मेल-जोल और सरल, संतुलित जीवन का सुंदर उदाहरण बन जाता है।

दक्षिण असम

रानी इन्द्रप्रभा देवी कछार (दिमासा) राज्य की दूरदर्शी और कुशल शासिका थीं, जिन्होंने 19वीं शताब्दी में अंग्रेजी प्रभाव के समय संतुलित और व्यावहारिक नीति अपनाकर राज्य की स्थिरता बनाए रखी। उन्होंने व्यक्तिगत सत्ता से ऊपर उठकर प्रजा के हित, सुरक्षा और सांस्कृतिक संतुलन को प्राथमिकता दी। उनका जीवन नारी शक्ति, धैर्य और विवेकपूर्ण नेतृत्व का प्रेरणादायी उदाहरण है।

उत्तर असम

रानी जयमती और कनकलता बरुवा असम की दो महान वीरांगनाएँ हैं, जिन्होंने अपने साहस और बलिदान से इतिहास को गौरवान्वित किया। रानी जयमती ने 17वीं शताब्दी में अत्याचार सहकर भी अपने पति और राज्य की रक्षा हेतु प्राणों का बलिदान दिया, जबकि कनकलता बरुवा ने 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में मात्र 17 वर्ष की आयु में तिरंगा फहराते हुए वीरगति प्राप्त की। दोनों का जीवन निष्ठा, साहस और राष्ट्रप्रेम का प्रेरणादायी उदाहरण है।

Great Martyr

Kanaklata Barua

उत्तर असम

एकल अभियान

मेरा अनुभव : "सप्तशक्ति संगम

मोंदिना चाकमा
मिजोरम

कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर प्रेरणादायी वक्तव्य प्रस्तुत किए गए—समाज में महिलाओं की भूमिका, शिक्षा के माध्यम से सशक्तिकरण, आत्मविश्वास का विकास, बच्चों की शिक्षा एवं राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका, सांस्कृतिक मूल्य, आत्मविकास तथा पर्यावरण। प्रत्येक सत्र ने यह समझ विकसित की कि जागृत मातृ शक्ति किस प्रकार मूल्यों, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता को पोषित कर सकती है। यह केवल एक सम्मेलन नहीं था, बल्कि एक सामूहिक संकल्प था। मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसे कार्यक्रम प्रतिवर्ष भव्य स्तर पर आयोजित किए जाने चाहिए, ताकि वे सभी महिलाएँ, जो किसी कारणवश इस बार शामिल नहीं हो सकीं, भविष्य में इसमें भाग लेकर सीखने और एक सशक्त समाज के निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

तिंगवांग सुइले
नागालैंड

असम प्रकाशन भारती, गुवाहाटी में आयोजित क्षेत्रीय कार्यशाला में मैंने पहली बार 'सप्तशक्ति संगम' शब्द सुना। उस समय न तो इसका अर्थ समझ में आया और न ही इससे संबंधित बातें स्पष्ट थीं।

किन्तु जब प्रान्त के अधिकारियों के मार्गदर्शन में इस कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु महिलाओं के साथ संवाद और संपर्क प्रारम्भ किया, तो अनेक महिलाएँ आगे आईं। उनलोगों ने न केवल कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग दिया, बल्कि उनके साथ एक आत्मीय संबंध भी स्थापित हुआ। गाँव की महिलाओं से अपार स्नेह और सम्मान प्राप्त हुआ, जो मेरे लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा।

वर्षा अग्रवाल
मेघालय

सप्तशक्ति संगम केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि हमारे समाज में महिलाओं की शक्ति, सहनशीलता और उनके मौन योगदानों का एक गहन प्रतिबिंब था। मेघालय जैसे मातृसत्तात्मक समाज में इस कार्यक्रम का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसने मुझे यह स्मरण कराया कि जहाँ महिलाओं का सामाजिक संरचना में महत्वपूर्ण स्थान है, वहीं उस शक्ति के साथ संतुलन, विवेक और जिम्मेदारी का होना भी उतना ही आवश्यक है। माताओं के मौन त्याग और सतत मार्गदर्शन ही सशक्त व्यक्तित्व और प्रगतिशील समाज की नींव रखते हैं।

राशेश्वरी
मणिपुर

सप्तशक्ति संगम' कार्यक्रम के दौरान कई प्रतिभागी महिलाओं से प्राप्त प्रतिक्रियाओं में एक बात समान रूप से सामने आई कि यह कार्यक्रम केवल विद्या भारती के विद्यालयों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। संभव हो तो इसे अन्य सामाजिक एवं स्थानीय स्तर पर भी आयोजित किया जाना चाहिए।

समाज की ओर से मिली यह प्रतिक्रिया मेरे लिए एक विशेष और महत्वपूर्ण अनुभव रही। यह अत्यंत प्रेरणादायी कार्यक्रम है, जिससे महिलाएँ बहुत अधिक प्रभावित और प्रेरित हुई हैं।

डॉ. पूनम मुखर्जी
त्रिपुरा

सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम में महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया।
इन आयोजनों ने महिला सशक्तिकरण के महत्व और राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद की।
हमें दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुँचने और हाशिए पर पड़े समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हम भविष्य के कार्यक्रमों में इन चुनौतियों का समाधान करने की योजना बनाएंगे।

ओदेर गाव
अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश में 'सप्तशक्ति संगम' का आयोजन के समय माताओं में स्पष्ट संकोच दिखाई दे रहा था। जैसे-जैसे कार्यक्रम आगे बढ़ा, एक सुंदर परिवर्तन देखने को मिला। सामूहिक गतिविधियों, संवाद और सहयोगपूर्ण वातावरण के माध्यम से माताएँ धीरे-धीरे खुलने लगीं। उनकी हर साझा की गई कहानी साहस, धैर्य और अनुभवों की उस गहराई को दर्शाती थी, जो अब तक छिपी हुई थी।
'सप्तशक्ति संगम' ने एकता और उत्तरदायित्व की ऐसी भावना विकसित की, जो कार्यक्रम से आगे तक विस्तारित हुई। जब माताएँ सशक्त होती हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला बन जाती हैं। उनका प्रभाव परिवारों, समुदायों और अंततः पूरे राष्ट्र तक पहुँचता है।

नितालिनी थाओसेन
दक्षिण असम

कार्यक्रम के प्रारंभ में कुछ महिलाएँ संकोच और शंका में थीं, लेकिन वही महिलाएँ आगे चलकर प्रेरित हुई और अपने हृदयस्पर्शी अनुभव साझा करने लगीं। कार्यक्रम ने यह एहसास कराया कि आने वाली पीढ़ी के चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण का आधार घर की माताएँ ही होती हैं, हालांकि इसमें परिवार के पुरुषों का सहयोग भी उतना ही आवश्यक है।
विभिन्न क्षेत्रों की महिलाओं का सम्मान करने के उद्देश्य से हम एक ह्मार ईसाई समुदाय के पास पहुँचे। प्रारंभ में वहाँ के चर्च के सदस्य काफी संदेह में थे, परंतु हमारे विनम्र आग्रह पर वे सप्तशक्ति संगम में शामिल होने के लिए सहमत हुए। कार्यक्रम का वातावरण देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए, क्योंकि यह उनकी अपेक्षाओं के बिल्कुल विपरीत था।
श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित नारी की सात शक्तियाँ (सप्तशक्ति) प्रत्येक महिला में निहित होती हैं जो सुप्त रहती हैं। सप्तशक्ति संगम ने इन शक्तियों को पुनः जागृत करने का एक सशक्त प्रयास किया है।

मलया राजवंशी पाठक
उत्तर असम

"सप्तशक्ति संगम" की तरह एक सुव्यवस्थित एवं एकरूप कार्यसूची के साथ पूरे भारतवर्ष में एक समान विषयों पर भाषण हुए—यह अनुभव अत्यंत विशिष्ट रहा।
"नारी ही नारी की शत्रु है", इस धारणा को "सप्तशक्ति संगम" ने ''नारी ही नारी की सबसे बड़ी शक्ति है'' में बदलने में सफलता हासिल की।
इस कार्यक्रम के माध्यम से आचार्या बहनों एवं अनेक माताओं को वक्ता के रूप में अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर मिला।
विद्या भारती द्वारा प्रदान किया गया यह मंच नारी प्रतिभा के विकास की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय पहल है।

गीतांजलि देवी
उत्तर असम

संघर्ष और कठिनाइयों से गुजरी उन महिलाओं की जीवन यात्रा का वर्णन जो सप्तशक्ति संगम के प्रत्येक कार्यक्रम में सुनने को मिला अत्यंत प्रेरणादायक और स्मरणीय रहा।
वर्तमान समय में कुछ महिलाएँ सरल और विलासितापूर्ण जीवन तथा मनोरंजन में अधिक आसक्त हो रही हैं, जो समाज व्यवस्था के लिए उचित नहीं है और असंतुलन उत्पन्न कर सकता है। हमें नारी नारायणी के रूप में जागृत होना होगा। वर्तमान समाज व्यवस्था में सप्तशक्ति — धृति, श्री, मेधा, स्मृति, क्षमा, वाणी आदि के माध्यम से परिवर्तन लाकर, नारी शक्ति को एक सकारात्मक और स्थिर सामाजिक क्रांति का निर्माण करना होगा।
वातावरण सुधरे और भारतीय जीवन शैली के माध्यम से प्रत्येक नारी स्वयं को, अपने परिवार और समाज को सशक्त बनाए। भारत की समाज व्यवस्था उच्चतम स्तर पर पहुँचे — यही कामना है।

मातृत्व सम्मान : त्याग, स्नेह और शक्ति का अभिनंदन

'सप्तशक्ति संगम' का एक महत्वपूर्ण आयाम 'मातृत्व सम्मान' है, जो माताओं और बहनों के त्याग, सेवा और समर्पण को नमन करता है। यह उन महिलाओं के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है, जिन्होंने अपने सुखों का त्याग कर परिवार, समाज और नई पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इनमें वे महिलाएँ शामिल हैं जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी बच्चों को संस्कार, शिक्षा और आत्मसम्मान दिया, परिवार को संभाला और समाज के लिए प्रेरणा बनीं। अनेक महिलाओं ने आर्थिक व सामाजिक चुनौतियों के बीच कार्य करते हुए परिवार का संबल बनने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में भी योगदान दिया।

पूर्वोत्तर में लगभग 2000 माताओं का सम्मान इस बात का प्रमाण है कि समाज की वास्तविक शक्ति उनके त्याग और संस्कारों में निहित है। यह सम्मान न केवल अभिनंदन है, बल्कि समाज को उनकी भूमिका का स्मरण कराने का एक प्रयास भी है।

সরস্বতী শিশু নিকেতন
উচ্চতর মাধ্যমিক বিদ্যালয়

अरुणाचल शिक्षा विकास समिति
सप्तशक्ति संगम

Jai Vidya
Jai Bharat Mata
Vidya Bharati
Saraswati Vi
dir, Boro Haflo
CERTIFICATE
of APPRECIATION

अरुणाचल शिक्षा विकास समिति
सप्तशक्ति संगम

Jay Sanskriti
Jay Bharatmata
SHIKSHA SAMITI
AGALAND
EN SOCIETY JALUKIE-B
AKTI SANGAM

पूर्वोत्तर क्षेत्र सप्तशक्ति संगम केंद्रित शोध गतिविधि प्रतिवेदन

प्रस्तावना

विद्या भारती के तत्वावधान में आयोजित 'सप्तशक्ति संगम' का मुख्य उद्देश्य समाज की मातृशक्ति को संगठित, सशक्त एवं संस्कारित करना है। पूर्वोत्तर क्षेत्र में इस संगम के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर माताओं की सक्रिय सहभागिता के साथ विविध शोध गतिविधियाँ सम्पन्न हुईं।

यह शोध कार्य केवल आँकड़ों तक सीमित न रहकर परिवार, संस्कार एवं समाज निर्माण में माताओं की भूमिका को समझने तथा उसे सुदृढ़ करने का एक सार्थक प्रयास रहा है।

इस शोधकार्य के प्रमुख उद्देश्य थे — माताओं में संस्कार निर्माण की चेतना जागृत करना, परिवार में भारतीय जीवन-मूल्यों के संवर्धन में मातृशक्ति की भूमिका का अध्ययन करना, बच्चों के सर्वांगीण विकास में माता की सहभागिता का मूल्यांकन करना तथा मातृशक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में अधिक सक्रिय बनाने के उपायों का अन्वेषण करना।

इस कार्य हेतु क्षेत्र के सात प्रांतों से कुल 8 विद्यालयों का चयन किया गया। इन विद्यालयों में माताओं के मध्य विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की गईं, जैसे— संस्कार वर्ग एवं संवाद सत्र, परिवार प्रबोधन कार्यक्रम, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता अभियान, भारतीय संस्कृति एवं परंपरा पर चर्चा तथा माता-शिक्षक संवाद आदि।

इस शोधकार्य के माध्यम से कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं—

- माताओं में संस्कार निर्माण के प्रति जागरूकता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- परिवार एवं विद्यालय के मध्य सुदृढ़ समन्वय स्थापित हुआ।
- समाज में मातृशक्ति के महत्व का पुनर्स्मरण हुआ।
- अधिकांश स्थानों पर माताओं की उत्साहपूर्ण एवं सक्रिय सहभागिता देखने को मिली।

इस कार्य के संचालन में कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा, जैसे—

- भौगोलिक एवं संपर्क संबंधी कठिनाइयाँ
- प्रारंभिक जागरूकता का अभाव
- विविध भाषाई एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ

मातृशक्ति जागरण के इस कार्य को अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने हेतु निम्नलिखित सुझावो पर विचार किया जा सकता है—

- मातृशक्ति के लिए नियमित प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएँ।
- प्रत्येक विद्यालय में माता समितियों को सक्रिय किया जाए।
- परिवार प्रबोधन कार्यक्रमों को निरंतरता प्रदान की जाए।
- स्थानीय भाषाओं में सामग्री का विकास किया जाए।

निष्कर्ष

पूर्वोत्तर क्षेत्र में आयोजित 'सप्तशक्ति संगम' के अंतर्गत मातृशक्ति पर आधारित शोध गतिविधियाँ अत्यंत सफल एवं प्रभावशाली सिद्ध हुई हैं। यह प्रयास संस्कारवान समाज के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं दूरगामी पहल के रूप में स्थापित हुआ है।

डॉ. पूनम मुखर्जी
(शोध प्रमुख)
विद्या भारती, पूर्वोत्तर क्षेत्र

सप्तशक्ति संगम समाचारों में

Gandhigram Tripureshwari School holds 'Saptashakti Sangam'

Observer Reporter

Agartala: Nov 14. The Saptashakti Sangam women's conference held at Tripureshwari Vidya Mandir, Gandhigram yesterday focused on empowering women, fostering leadership and community engagement.

This initiative aligns with the broader Saptashakti Sangam program, which aims to empower women through education, cultural preservation, and social awareness. The program has been successfully implemented in various regions. The Saptashakti Sangam highlights the importance of women's roles in shaping society and promoting Indian values.

and Prof. Milan Rani Jamatia, President, Vidya Bharati Shiksha Samity Tripura, who shared insights on women's contributions. Tandra Gan Chaudhary, President, SMC, Tripureshwari Vidya Mandir Gandhigram, presided over

PRESS NOTICE INVITI
NO-e-PT-7/EE/RDUD/G/2025-2026
On behalf of the 'Governor of Tripu
R.D Udaipur Division, Udaipur, Goma

STATE

Saptashakti Sangam held at KGBV Mirem

Mingkeng Osik

MIREM, NOV 18: The campus of Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya (KGBV) came alive on Tuesday as the Arunachal Shiksha Vikas Samiti organised Saptashakti Sangam, celebrating culture, discipline and holistic education at Mirem village.

Bilat circle officer Jyoti Borang, who graced the programme as chief guest, applauded the efforts of the organisers and encouraged the students

she emphasised that such events play a crucial role in shaping confident and responsible future citizens.

Former Bilat ZPM Neyi Taloh appreciated the initiative and highlighted the importance of co-curricular exposure for the all-round development of students. They praised the enthusiasm and discipline displayed by the participants throughout the event.

Students show-

sentations reflecting the seven dimensions of empowerment. The guiding motto of the samiti's Jai Vidhya, Jai Sanskriti and Jai Bharat Mata was strongly reflected in the energy of the event.

Organisers and teachers shared that Saptashakti Sangam aims to build leadership qualities, teamwork and cultural awareness among students also their mothers. They added that such platforms help young

বিদ্যা ভাৰতীৰ সপ্তশক্তি সঙ্গম সমাপন অনুষ্ঠান সম্পন্ন

পাঠক সংবাদ, আগরতলা, ১৯ ফেব্রুয়ারি ঃ ১৯ ফেব্রুয়ারি ত্রিপুরা বিশ্ববিদ্যালয়ের সেন্ট্রাল লাইব্রেরির কনফারেন্স হলে সপ্তশক্তি সঙ্গমের সমাপন অনুষ্ঠান অনুষ্ঠিত হয়। অনুষ্ঠানে শিক্ষক, গবেষক, শিক্ষার্থী এবং গণ্যমান্য ব্যক্তিরা উপস্থিত ছিলেন। ত্রিপুরা বিশ্ববিদ্যালয়ের দর্শন বিভাগের সহকারী অধ্যাপক ড. সিন্ধু পৌড়িয়াল প্রধান অতিথি হিসাবে উপস্থিত ছিলেন। বিদ্যা ভারতী শিক্ষা সমিতি ত্রিপুরার সভাপতি অধ্যাপক মিলন রাণী

সংগঠিত এই কার্যক্রমের উপর একটি বিস্তারিত প্রতিবেদন

উপস্থাপন করেন। স্কুল এবং সংস্কার কেন্দ্রগুলিতে মোট ২৩টি

উদ্দেশ্য ছিল নারীর ক্ষমতায়ন প্রচার করা এবং সমাজ ও দেশে নারীর ভূমিকা তুলে ধরা। ডঃ সিন্ধু পৌড়িয়াল এবং অধ্যাপক মিলন

गारो हिल्स के बेलबारी में उत्साहपूर्वक मनाया गया सप्त शक्ति संगम

शिलांग, 22 जनवरी (खसं.)। मेघालय के गारो हिल्स स्थित बेलबारी में सप्त शक्ति संगम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 430 से अधिक माताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जबकि कल

गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें सप्त शक्ति संगम (गारो हिल्स) की समन्वयक कौशिला कोच, मुख्य अतिथि डॉ. रोंगोना कोच, डॉ. पद्मिनी बैकुंठ रॉय, कनकलता हाजोंग, सप्त शक्ति संगम समिति की अध्यक्ष

की महत्वपूर्ण भूमिका को सम्मानित एवं रेखांकित करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ भावपूर्ण वंदना से हुआ। जिसके पश्चात गारो हिल्स के दिवंगत कमल कुमार निरीक्षक को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संवेदना व्यक्त की गई। यह जानकारी मेघालय प्रचार संयोजक श्री विवेक तिवारी ने दी। इस अवसर पर कई विशिष्ट अतिथियों की

नौ माताओं को उनके योगदान के लिए प्रमाण पत्र, पुस्तकें एवं पारंपरिक शॉल प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मानित माताओं ने अपने प्रेरणादायक जीवन अनुभव साझा करते हुए उपस्थित जनसमूह को समर्पण, संघर्ष और सफलता की प्रेरणा दी। माताओं द्वारा प्रस्तुत सामूहिक गीत एवं पारंपरिक नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आयोजन को और भी जीवंत बना दिया। साथ ही माताओं ने सामूहिक रूप से संकल्प लिया, जिसमें पारिवारिक मूल्यों और सामाजिक दायित्वों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। अपने संबोधन में अतिथियों ने सशक्त परिवार और समरस समाज के निर्माण में माताओं की अनिवार्य भूमिका पर प्रकाश डाला तथा महिलाओं में निहित सप्त शक्तिअर्थात सात अंतर्निहित शक्तियोंकी अवधारणा को विस्तार से समझाया। कार्यक्रम की सार्थकता और प्रेरणादायक स्वरूप की सभी सहभागी माताओं ने भरी-भरी प्रशंसा की। अंत में सभी उपस्थित लोगों को

Mothers' conference organised at EMRS Khela to strengthen bond between mother, school community

KHELA, Nov 05: Eklavya Model Residential School (EMRS) Khela, Tirap District run by Arunachal Shiksha Vikas Samiti (ASVS), affiliated to Vidya Bharati Akhil Bharatiya Shiksha Sansthan, New Delhi, organised the Matri Sammelan (Mothers' Conference) under the banner of Sapta Shakti Sangam with great enthusiasm at EMRS Khela. The event celebrated the spirit of motherhood, unity, and women empowerment, aiming to strengthen the bond between parents—especially mothers—and the school community.

the spread of knowledge and positivity. A shloka recitation by teacher Yasum Saroh set a serene and spiritual tone for the event. This was followed by a welcome song and a Matri Shakti song by students, expressing love, gratitude, and respect for mothers.

Addressing the gathersive society.

A quiz competition for mothers brought joy and excitement, showcasing their enthusiasm, wisdom, and active involvement. The felicitation of mothers and the winners of the State EMRS Fest was among the most memorable moments, acknowledging the

moral, emotional, and spiritual foundation of the younger generation, calling them the true pillars of a healthy and progressive society.

Guest of honour L Gautam shared her insights on nurturing children, comparing it to the growth of a tree where care, patience,

ingful programme for mothers. Sharing of personal experiences by mothers added warmth and emotional depth to the event.

Towards the end, all participants took a pledge to honour, respect, and uphold the dignity of motherhood. The event con-

Saptashakti Sangam closing ceremony held at TU

Observer Reporter

Agartala: Feb 19. The closing ceremony of Saptashakti Sangam took place at the Conference Hall, Central Library, Tripura University on February 19. The event was attended by educators, research scholars, students, and dignitaries.

event and presented a detailed report on the activities organized since October 4, 2025. A total of 23 events were held in schools and sanskar kendras, with around 1500 participants, including mothers, teachers, educators, and social leaders.

The objective of the events was to promote women empowerment and highlight

থমনা শংকৰদেৱ শিশু নিকেতনত সপ্তশক্তি সংগম অনুষ্ঠান

কল্পনা দাসসহ পাঁচগৰাকীলৈ সন্মান

মুছলপুৰ ঃ এজন সংবাদদাতা, ১১ জানুৱাৰী ঃ বিদ্যা ভাৰতী অখিল ভাৰতীয় শিক্ষা সংস্থানৰ সংবদ্ধ তথা শিশু শিক্ষা সমিতি, অসমৰ অন্তৰ্গত শংকৰদেৱ শিশু নিকেতনসমূহত মাতৃ সম্মিলনক বিশেষ গুৰুত্ব দিয়া হয়। মাতৃৰ জৰিয়তেহে শিশুৰ সৰ্বাংগীণ বিকাশ সম্ভৱপৰ বুলি ঠাৱৰ কৰা হয়। সম্প্ৰতি এই নিকেতনসমূহত 'সপ্তশক্তি সংগম' শীৰ্ষক মাতৃ সম্মিলন অনুষ্ঠান ৰূপায়ণ কৰা হয়। ইয়াৰ অংশস্বৰূপে আজি বাক্‌সা জিলাৰ থমনাস্থিত শংকৰদেৱ শিশু নিকেতনত 'সপ্তশক্তি সংগম' শীৰ্ষক মাতৃ সম্মিলন অনুষ্ঠিত হয়। বস্তিপ্ৰজ্বলনেৰে আৰম্ভ হোৱা এই অনুষ্ঠানত নিজৰ সন্তানক সু-শিক্ষাৰে শিক্ষিত কৰি

সমন্বয় সহঃ সংযোজিকা অনুপমা দেৱী উপস্থিত থাকি কয়, 'মাতৃসকলে তেওঁলোকৰ সন্তানৰ বাবে বহু ত্যাগ কৰে। মাতৃসকল বৰ সহনশীল। ভগবানে মাতৃসকলক সহ্য, ধৈৰ্য গুণ দিছে। সন্তানৰ সফলতাত মাতৃৰ বহুখিনি অৱদান থাকে।' তেওঁ মহাভাৰতৰ উদাহৰণৰ সহায়ত

Sapta Shakti Sangam Celebrated with Enthusiastic Participation in Belbari, Garo Hills

Guwahati, Jan 22: The Sapta Shakti Sangam was successfully organized at Belbari in Garo Hills on January 21, 2026. The event witnessed

Baikunth Roy, Konoklata Hajong, Sapta Shakti Sangam Committee President Satyabhama Koch, and Secretary Smt. Janoki Hajong.

On the occasion, nine locally accomplished mothers were felicitated with certificates, books, and traditional shawls in recognition of their contributions. The honored mothers shared their inspiring life experiences, motivating the gathering through their stories of dedication, perseverance, and

“नारी केवल जननी ही नहीं, वह संस्कारों की प्रथम पाठशाला है।”

विद्या भारती पूर्वोत्तर क्षेत्र

नामघर पथ, आर. जी. बरुवा रोड, गुवाहाटी - 05

QUOTATIONS
(can be placed at the bottom of some pages)

1.

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥”
श्लोक मनुस्मृति, अध्याय 3, श्लोक संख्या-56

2.

"कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा॥”
श्रीमद्भगवद्गीता, दशम अध्याय (विभूति योग), श्लोक संख्या- 34

3.

“या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥”
दुर्गा सप्तशती (देवी माहात्म्य)

4.

“नारी, तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास-रजत-नग पग-तल में;
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुंदर समतल में।”
— कामायनी, जयशंकर प्रसाद

5.

“किसी राष्ट्र की उन्नति का सबसे अच्छा मापदंड उसकी महिलाओं की स्थिति है।”
— डॉ. भीमराव आंबेडकर

6.

“एक शिक्षित स्त्री पूरे परिवार को शिक्षित करती है।”
— पंडित जवाहरलाल नेहरू

7.

“स्त्री शक्ति का स्वरूप है; वह सृजन, संवर्धन और संस्कार की आधारशिला है।”
— रवीन्द्रनाथ ठाकुर

8.

“जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।”
— रामायण

9.

“नारी शक्ति है, नारी ही सृष्टि की आधारशिला है।”
— स्वामी विवेकानंद

10.

11.

“सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी॥”
-सुभद्रा कुमारी चौहान

Where is the matter????

क्षेत्रीय
कार्यशाला के
फोटो